शैव धर्म का विकास

श्रीधर तिवारी

Scanned with OKEN Scanner

प्रो. नागेश दुबे
अध्यक्ष / Head
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (M.P.)

मध्यप्रदेश में

शैव धर्म का विकास

(प्रारम्भिक काल से ईस्वी १२०० तक)

डा० श्रीधर तिवारी

क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी
नई दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner

Subsidised by the Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar out of U. G. C. Grant. Thesis was originally titled "Madhya Pradesh mein Shaiv Dharam ka Vikas"

Published under the authority of the University of Sagar. This thesis was accepted for Ph. D. degree by the University of Sagar.

© डा० श्रीधर तिवारी

प्रथम संस्करण : १९८८

प्रकाशक
वी० के० तनेजा
क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी
२८, शॉपिंग सैन्टर, करमपुरा,
नई दिल्ली-११००१५

भारत में मुद्रित

मूल्य : १००-००

मुद्रक :
रायल प्रिन्टर्स
बलबीर नगर, शाहदरा,
दिल्ली-११००३२

शब्दानुक्रमणिका

ऋ० वे०	= ऋग्वेद
अ० प०	= अथर्ववेद
वा० सं०	= वाजसनेयी संहिता
तै० सं०	= तैत्तिरीय संहिता
को० ब्रा०	= कौषीतकि ब्राह्मण
ऐत० ब्रा०	= ऐतरेय ब्राह्मण
जै० ब्रा०	= जैमिनी ब्राह्मण
शत० ब्रा०	= शतपथ ब्राह्मण
ऋ०	= ऋग्वेद
हि० गृ० सू०	= हिरण्य गृह्यसूत्र
श्वेता० उप०	= श्वेताश्वर उपनिषद
मैत्रा० उप०	= मैत्रेयी उपनिषद
बौध० धर्मसूत्र	= बौधायन धर्मसूत्र
किष्क०	= किष्किन्धा काण्ड
उ० का०	= उत्तर काण्ड
वायु० पु०	= वायु पुराण
अग्नि पु०	= अग्नि पुराण
ब्रह्म पु०	= ब्रह्म पुराण
लिंग पु०	= लिंग पुराण
सौर पु०	= सौर पुराण
पद्म पु०	= पद्म पुराण

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

भूमिका : शैव दर्शन की भूमिका १-१०

प्रथम अध्याय : शैव धर्म के आधारभूत सिद्धान्त ११-२५

ऋग्वेद, अथर्व वेद, यजुर्वेद, वाजसनेयी संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, गृह सूत्र, उपनिषद, रामायण, महाभारत पुराण, पाशुपत, श्रीकंठ, लकुलीश, पाशुपत सिद्धान्त।

द्वितीय अध्याय : प्रारम्भिक काल से ६५० ई० तक २६-३७

ताम्रश्मयुगीन शिव उपासना, निषादपति त्रिपुर ध्वंस, अवंति चंद्र प्रद्योत लकुलीश, लकुलीश का काल, मज्झिमिनी की मुद्राओं पर शिव, विदेशी शासक के नामकरण, पद्मावती, मघ राजाओं, वृषभ का अंकन कुषाण मुद्राओं पर शिव अंकन, उदयगिरि की शैव गुफा, कालिदास, स्कंद सप्तमात्रिकायें, शैव मन्दिर, भुमरा नचना, शिवलिंग मुखलिंग मन्दसौर, यशोधर्मा, मिहिरकुल, मालती माधव, कापालिक महाकाल शिव-मन्दिर, मल्हार।

तृतीय अध्याय : विभिन्न शैव सम्प्रदायों का विकास : ६५० से ८५० ई० तक ३८-४५

पाशुपत, नकुलीश (लकुलीश) पाशुपत, पाशुपत विधि की प्राचीनता, जातक, महाभारत पुराण, जीवन चर्या, आचार्य परंपरा, हुएनसांग, पाशुपत मत के प्रधान

Scanned with OKEN Scanner

5. अर्धनारीश्वर, सागर, गोपालगंज

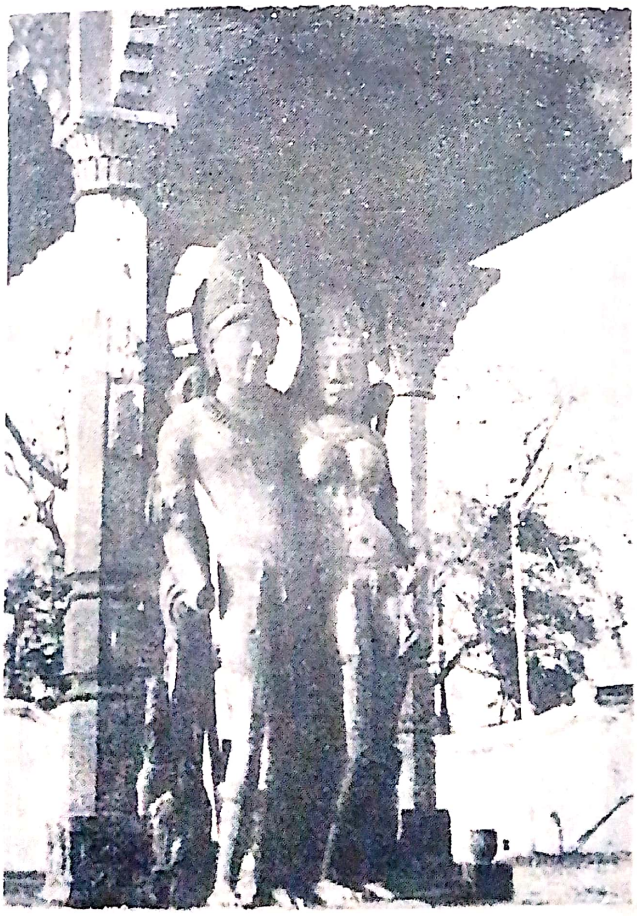

6. उमा-महेश्वर, रीवां

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner